प्रशासनिक सुधार →

अलाउद्दीन एक स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश शासक था वह प्रशासन के केन्द्रीकरण में विश्वास रखता था। इसके लिये उसने निम्नलिखित उपाय किये।

विद्रोह रोकने के उपाय → (चार अध्यादेश)

~~(चार अध्यादेश)~~

1. राज्य द्वारा वक्फ या धार्मिक कार्यों के लिये प्रदत्त अनुदान एवं इनामों को रद्द कर दिया। अनेक व्यक्तियों की पेंशन बंद कर दी। करमुक्त भूमि पर पुनः कर लगा दिया धनी व्यक्तियों से जबरदस्ती धन वसूला गया गया नये कर लगाये गये एवं करों की मात्रा में वृद्धि की।
2. कुशल एवं व्यापक गुप्तचर व्यवस्था का गठन।
3. दिल्ली में शराब एवं नशीले पदार्थों पर पूर्ण प्रतिबन्ध
4. समारोहों; प्रीतिभोज एवं अमीरों के मध्य वैवाहिक संबंधों के निश्चित करने के पूर्व सुल्तान की अनुमति अनिवार्य।

ग्रामीण विशिष्ट वर्ग का दमन। ये प्रायः विद्रोहियों को आर्थिक एवं सैन्य सहायता प्रदान करते थे। अलाउद्दीन ने इनके समस्त विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया तथा इनसे भी दृढ़तापूर्वक कर वसूली की। इनकी स्थिति साधारण कृषकों के समतुल्य हो गयी।

धार्मिक वर्ग पर नियंत्रण अलाउद्दीन का विचार था कि राजनीति तथा धर्म विपरीत कार्यक्षेत्र है। धर्म तथा धार्मिक आदेशों का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं। यद्यपि अलाउद्दीन खलीफा को मान्यता दी तथापि उसने जवाबित को शरीयत पर महत्ता प्रद

की। उलेमा तथा धार्मिक नेताओं पर कठोर नियंत्रण बनाये रखा।

④ गुप्तचर विभाग का पुनर्गठन → राज्य में शांति व्यवस्था बनाये रखने एवं ~~विद्रोह~~ विद्रोही प्रवृत्तियों पर निगरानी के लिये कुशल एवं सक्षम गुप्तचर विभाग का पुनर्गठन किया

⑤ सैन्य सुधार → सुल्तान ने सेना के संगठन में विशेष दिलचस्पी ली। उसने सेना का केन्द्रीकरण किया और स्थायी सेना की व्यवस्था की।

→ सैनिकों का हुलिया (चेहरा) तथा नामावली और घोड़ों को दागने की व्यवस्था प्रारंभ की।

→ सैनिक तथा सैन्य साजो सामान का कठोर निरीक्षण

→ किलेबन्दी को महत्व दिया गया

⑥ तीव्र एवं सक्षम डाक प्रणाली की व्यवस्था की गई है जिससे सूचनाओं का आदान प्रदान तीव्र हो।

इस प्रकार अलाउद्दीन के प्रशासनिक सुधारों ने उसे सक्षम एवं विशाल सेना की सहायता से न केवल राज्य का विस्तार किया अपितु राज्य के राज्य के स्वेच्छाचारी तत्वों का दमन का पूर्ण सत्ता अपने हाथों में केन्द्रित कर ली। ~~इस के दोनों ही वर्ग जो सुल्तान~~ उसने पुराने अमीरों का दमन किया तथा उलेमा के धार्मिक आदेशों से मुक्त रहा। इस के दोनों ही वर्ग जो सुल्तान की सत्ता पर अंकुश रखते थे, अलाउद्दीन के समय प्रभावशाली नहीं रहे।